International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2017, Submitted in April 2017, iajesm2014@gmail.com

''स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन''

नेकराम, प्राचार्य एवं व्याख्याता, श्री गुरुनानक कन्या महाविधालय, गजसिंगपुर
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में **स्वनिर्मित जीवन संतुष्टि प्रश्नावली एवं स्वनिर्मित कुण्ठा मापनी** का उपयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – स्नातक स्तर, तकनीकी महाविद्यालय, जीवन संतुष्टि एवं कुण्ठा।

प्रस्तावना :–

मनुष्य समाज में सर्वाधिक संख्या युवा वर्ग की है। युवा वर्ग समाज की रीढ़ है। समाज में रहने वाले लोग युवाओं को विशेष आशा की दृष्टि से देखते हैं। युवा वर्ग समाज के नव–निर्माण में विशेष योगदान देता है। जिस देश का युवा वर्ग शक्ति से युक्त, साहस से युक्त, आशावादी तथा प्रगतिवादी होता है, वह देश असीम ऊँचाईयों का स्पर्श करता है। हम अपने ही देश को ले तो कह सकते है कि धन या संसाधनों की कमी होने के बावजूद हमारे देश की युवा शक्ति ने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये हैं कि कार्य के प्रति निष्ठा, समर्पण तथा निरन्तरता ही लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन है।

भारतीय समाज में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है। प्रारम्भ से ही वह अपने परिवार के सदस्यों द्वारा सामाजिक और व्यावहारिक बातें स्वयं ही सीख जाता है। परिवार में विपरीत परिस्थितियों के आने पर किस प्रकार परिवार वाले सहयोग व आत्म–विश्वास से उन विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने को सही स्थिति में ले आते हैं। सर्वप्रथम बालक परिवार से ही जीवन में संतुष्टि प्राप्त करता है। जैसे–जैसे बालक विद्यालय में प्रवेश करता हुआ आगे बढ़ता है। अनेक परिस्थितियाँ उसे जीवन जीने का ढंग सिखाती है। मनुष्य जीवन के द्वारा हमें हर समय एक विशेष शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जीवन की सार्थकता को पहचानने के लिए हमें विपरीत एवं कठिन परिस्थितियों से गुजरना ही पड़ेगा। यहह कठिन परिस्थितियाँ ही हमें जीवन में सशक्त व आशावान बनाती है। अगर हम परिस्थितियों से हार मानकर बैठ जाते हैं तो फिर हमारा जीवन व्यर्थ है। हमारे और अन्य जीवन–जन्तुओं में कोई अन्तर नहीं है।

सर्वप्रथम बालक परिवार से, फिर विद्यालय से तत्पश्चात् महाविद्यालय से अपने जीवन को सजाता संवारता एवं अनुभव युक्त करता रहता है। उच्च माध्यमिक स्तर से निकलते हुए छात्रों एक चुनौती होती है कि उन्हें समाज में अपना एक अलग स्थान बनाना है। आजकल हम देखते हैं कि युवा वर्ग अति संवेदनशील व महत्वाकांक्षी है, व्यवसाय को लेकर अति चिन्तित है। उचित निर्देशन के अभाव में वह सही कैरियर नहीं चुन पाते हैं तो वे कभी–कभी जीवन से पलायन करने की तरफ अग्रसर हो जाते हैं। आज के युवा वर्ग का राष्ट्रीय विकास और निर्माण महत्वपूर्ण भूमिका है। समस्त मानवतावादी औद्योगिक लक्ष्यों में जीवन संतुष्टि को सर्वमान्य माना गया है क्योंकि जीवन में संतुष्टि प्राप्त करने की कामना न सिर्फ कार्यकर्त्ता ही करते हैं बल्कि प्रबंधक व उद्योगपति भी समान रूप से इसकी इच्छा रखते हैं। यह स्वाभाविक है कि जो व्यक्ति जिस कार्य का सम्पादन करता है यदि उससे पर्याप्त जीवन संतुष्टि अनुभव होती है तो निःसंदेह इससे कार्य की मात्रा व गुण दोनों प्रभावित होगे।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

किशोरावस्था के बच्चे अतीव संवेदनशील तथा महत्वाकांक्षी है, व्यवसाय को लेकर अति चिन्तित होते हैं। उचित निर्देशन के अभाव में वह सही कैरियर नहीं चुन पाते तो वे कभी–कभी जीवन से पलायन करने की तरफ अग्रसर हो जाते हैं। आज के भूमण्डलीकरण के दौर में व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा स्वाभाविक है, परन्तु हर व्यक्ति को एक ही प्रयास में सफलता मिल जाए, यह आवश्यक नहीं है।

युवा वर्ग भौतिकवादी संस्कृति तथा भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के बीच हिचकोले खाता हुआ कभी–कभी इस सागर में डूब जाता है। हमारे शोध का प्रमुख लक्ष्य युवा वर्ग के मन में जीवन संतुष्टि लाकर व कुण्ठा को कम करके मन में आत्म–विश्वास जगाना व व्यावसायिक परिपक्वता को जानकर युवा वर्ग किस प्रकार अपने लक्ष्य तक पहुँचते है।

युवावस्था ही भविष्य निर्माण की महत्वपूर्ण अवस्था है। यही वह स्वर्णिम अवस्था भी होती है जो उसे एक निश्चित दिशा की ओर भी ले जाती है। अतः हमारा विशेष उद्देश्य है कि हम समाज के एक विशिष्ट वर्ग अर्थात् युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का अध्ययन कर समाज व शिक्षित समाज को मनोविज्ञान से परिचित करा सके।

हमारी समस्या आज के समाज के लिए एक सशक्त आधार तैयार करती है तथा हमारा शोध युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का आन्तरिक द्वन्द्व, चलता रहता है। अतः हम युवा वर्ग के जीवन में चल रहे जीवन संतुष्टि व कुण्ठा को जानकर आने वाले समय में आ रही बाधाओं को दूर किया जा सकता है। यह शोध युवा वर्ग के मानवीय संगठन तथा निर्माण के लिए विश्व शांति के लिए मानवता की सुरक्षा के लिए बालकों के व्यक्तित्व के उचित विकास के लिए आवश्यक है।

इन्हीं समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा ''स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

"स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग की जीवन संतुष्टि व कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन।"

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए हैं –

1. स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन को स्नातक स्तरीय महाविद्यालय तथा तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन को 100 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन को स्नातक स्तरीय महाविद्यालय और तकनीकी महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में श्रीगंगानगर जिले के स्नातक स्तरीय महाविद्यालय और तकनीकी महाविद्यालय के 100 युवा वर्ग के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 विद्यार्थियों में से 50 विद्यार्थी स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व 50 विद्यार्थी तकनीकी महाविद्यालय से लिये गये हैं।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्नातक स्तरीय महाविद्यालय के 50 विद्यार्थियों में से 25 छात्रों और 25 छात्राओं को चयनित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में तकनीकी महाविद्यालय के 50 विद्यार्थियों में से 25 छात्रों और 25 छात्राओं को चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. **स्वनिर्मित जीवन संतुष्टि प्रश्नावली**
2. **स्वनिर्मित कुण्ठा मापनी**

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विष्लेषण :–

सारणी संख्या 1 स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि को दर्शाती सारणी

क्रं. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	स्वातन्त्रय संख्या	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तरीय महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	151.00	23.32	0.72	98	N.S.
2.	तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	148.00	17.55			

सार्थकता स्तर – 0.05 एवं 0.01 N.S. = Not Significant

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के अनुसार स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 151.00 एवं 148.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.32 एवं 17.55 है। तथ्य गणना में स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि के प्राप्त अंकों का टी–मूल्य 0.72 प्राप्त हुआ है जो इस बात को सिद्ध करता है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि सार्थक अन्तर स्पष्ट करने के लिए 98 स्वातन्त्रय संख्या के अनुसार टी–मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 होना आवश्यक है और प्राप्त टी–मूल्य 0.72 आवश्यक मूल्य से कम है। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या 2 स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा को दर्शाती सारणी

क्रं. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	स्वातन्त्रय संख्या	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तरीय महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	138.00	19.19	0.73	98	N.S.
2.	तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थी	50	135.00	21.77			

सार्थकता स्तर – 0.05 एवं 0.01 N.S. = Not Significant

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के अनुसार स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा का मध्यमान क्रमशः 138.00 एवं 135.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 19.19 एवं 21.77 है। तथ्य गणना में स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा के प्राप्त अंकों का टी–मूल्य 0.73 प्राप्त हुआ है जो इस बात को सिद्ध करता है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की कुण्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि सार्थक अन्तर स्पष्ट करने के लिए 98 स्वातन्त्रय संख्या के अनुसार टी–मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 होना आवश्यक है और प्राप्त टी–मूल्य 0.73 आवश्यक मूल्य से कम है। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :–

परिकल्पना 1 :–

''स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि सार्थक अन्तर स्पष्ट करने के लिए 98 स्वातन्त्रय संख्या के अनुसार टी–मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 होना आवश्यक है और प्राप्त टी–मूल्य 0.72 आवश्यक मूल्य से कम है। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2 :–

''स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।''

स्नातक स्तरीय महाविद्यालय व तकनीकी महाविद्यालय के विद्यार्थियों की कुण्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि सार्थक अन्तर स्पष्ट करने के लिए 98 स्वातन्त्रय संख्या के अनुसार टी–मूल्य 0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 1.98 व 2.63 होना आवश्यक है और प्राप्त टी–मूल्य 0.73 आवश्यक मूल्य से कम है। इसलिए यह स्पष्ट है कि स्नातक स्तरीय महाविद्यालय एवं तकनीकी महाविद्यालय के युवा वर्ग के विद्यार्थियों की कुण्ठा में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2008) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.एल. बुक डिपो, मेरठ
2. सरीन, डॉ. शशिकला (2007) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
3. माथुर, डॉ. एस.एस. (2010) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
5. पाण्डे, के.पी. (2007) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दोआबा हाऊस प्रकाशन, नई दिल्ली
6. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
7. कोल, लोकेश (2006) : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली

9828015814 SEA 9309415814
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY